प्रस्तुत हैं वे 16 प्रयोग

अगर कहीं, किसी जगह प्रेम का जिक्र होता है, तो राधा का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है . . . क्यों?

क्योंकि वह एक दृढ़ निश्चयी कन्या थी, एक निर्भीक प्रेमिका थी, एक संवेदनशील स्त्री थी . . . एक बार कृष्ण को चाहा, तो फिर जीवन भर उसकी ही मूर्ति को अपने हृदय में बसाये रखा, फिर कभी भी किसी अन्य पुरुष को देखना तो दूर, ऐसा ख्याल भी उसके मन में नहीं आया।

यह बात अलग है, कि उसके पिता ने जबरन उसका विवाह पास के गांव के एक बनिये से कर दिया था, पर फिर भी जीवन भर वह अपने कृष्ण की रही, अपने कान्हा की ही रही . . . और उसने इस प्रकार यह सिद्ध कर दिया, कि स्त्री को रोका तो जा सकता है, परन्तु उसके मन को विवश नहीं किया जा सकता . . . वह तो एक बार जिस पर आ गया . . . तो आ ही गया।

वृषभानु की वह भोली-भाली कन्या, जिसने अपना समस्त जीवन कृष्ण की बाहों में, अपने प्रियतम के आगोश में, यमुना के तट पर बिता दिया था, वह बाद में विवश हो एक छोटे से घर में कैद तो हो कर रह गई, पर उसकी समस्त देह, उसका मन, उसका रोम-रोम मानो कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगाता रहा . . .

कृष्ण भी राधा के बिना एक क्षण भी नहीं रह पाते थे। . . . एक दिन भी उससे मिले बगैर निकल जाता था, तो उनको बेचैनी होने लग जाती थी . . . और

निद्रा उसकी आंखों से दूर हो गई और वह दिन-प्रतिदिन कमजोर एवं विक्षिप्त सी हो गई। एक दिन जब वह कृष्ण के ही ख्यालों में डूबी हुई यमुना के तट पर विचरण कर रही थी, कि अचानक देवर्षि नारद उसके समक्ष प्रस्तुत हुए। नारद के पूछने पर राधा ने उन्हें अपनी आपबीती कह सुनाई और अंत में यह भी जोड़ दिया – 'यदि मैं क़ान्हा को न पा सकी, तो यमुना में ही कूद कर अपने प्राणों को विसर्जित कर दूंगी।''

नारद को तो हमेशा अठखेलियां ही सूझती हैं, कुछ देर तो वे सोचते रहे, कि भगवान को किस तरह बांधा जाय, मैं तो बांध नहीं पाया, शायद यह बांध ले। मन ही मन मुस्कुरा कर उन्होंने कहा – ''एक विधि तो है, परन्तु . . .।''

''परन्तु क्या? बताइये न! चुप क्यों हो गए?''

''परन्तु वह अत्यधिक जटिल है, तुम कर पाओगी?''

''क्यों नहीं, आप बोलिये तो सही . . . अपने प्राणों की आस तो मैं पहले से ही छोड़ बैठी हूं।''

''यद्यपि कृष्ण पूर्ण सोलह कला दिव्य व्यक्तित्व हैं, अतः किसी सामान्य विधि से उन्हें प्राप्त कर पाना मुश्किल है। इसके लिए तो उनकी एक-एक कला को ही वशीभूत करना पड़ेगा, तभी वे पूर्ण रूपेण तुम्हारे आकर्षण-पाश में बंध पायेंगे।''

''पर वह विधि क्या है'' – राधा ने व्यग्र हो कर पूछा।

''हर कला के लिए एक विशेष साधना है, जिसको सम्पन्न करने से वह कला वशीभूत हो जायेगी। इनमें सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि जहां इन साधनाओं के माध्यम से तुम अपने प्रियतम को वशीभूत कर सकोगी, वहीं तुम स्वयं में भी ऐसा अनुभव करोगी, कि वे कलाएं आंशिक रूप से तुम्हारे अन्दर प्रवेश कर गई हैं।''

''अतः एक तरह से फिर तुम स्वयं भी षोडश कला पूर्ण हो सकोगी और अपने चितचोर को रिझा सकोगी, क्योंकि तुम स्वयं उस स्तर पर पहुंच कर ही उस पूर्ण पुरुषत्व युक्त व्यक्तित्व को प्राप्त कर सकोगी।''

वे तुरन्त यमुना किनारे अपनी मुरली की तान छेड़ कर अपनी प्रियतमा को आने का निमंत्रण देने लगते . . .

कृष्ण जैसे निर्मोही को भी राधा ने वश में कर लिया था . . . परन्तु यह सम्भव कैसे हुआ?

उनके इर्द-गिर्द तो सैकड़ों गोपियां और ग्वाल-बालाएं विचरती रहती थीं, जो अत्यन्त आकर्षक और सम्मोहक थीं, परन्तु कृष्ण तो उनकी ओर देखते भी न थे . . . तो इस चञ्चला ने, इस ग्वाल-कन्या ने कान्हा पर ऐसा क्या जादू कर दिया, कि वे उसके वशीभूत हो गए?

जब समस्त गोपिकाएं कृष्ण को रिझाने की चेष्टा करतीं और उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने की कोशिश करतीं, तो राधा मन ही मन सोचती, कि एक न एक दिन कान्हा को अपना बनाना ही है, फिर चाहे उसके लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े। इसके साथ ही साथ . . .

–राधा को इस बात का आभास भी था, कि कृष्ण सामान्य पुरुष नहीं हैं, पुरुषोत्तम हैं, सोलह कलाओं से युक्त हैं, अतः वह परेशान रहती, कि किस प्रकार इस पूर्ण पुरुष को अपना बनाऊं?

इस सोच-विचार में वह खाना-पीना भी भूल गई,

ऐसा कहने के उपरान्त नारद ने राधा को दीक्षा दी और राधा ने उन्हें गुरु रूप में स्वीकार किया। फिर उन्होंने राधा को उन सोलह अद्वितीय प्रयोगों की साधना विधि समझाई, जिन्हें सम्पन्न कर वह कृष्ण के हृदय की धड़कन बन सकी, उनके आंखों की ज्योत्सना बन सकी।

इन प्रयोगों को स्त्री या पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है और लाभ उठा सकता है। **इन अद्वितीय सोलह प्रयोगों में से कुछ प्रयोग इन पन्नों पर प्रस्तुत किये जा रहे हैं, बाकी प्रयोग शृंखला रूप में अगले अंकों में प्रस्तुत किये जायेंगे।**

मोहिनी प्रयोग

यह अत्यन्त तीव्र साधना है एवं इसका प्रभाव अचूक और निश्चित होता है। यदि किसी व्यक्ति को वशीभूत करना हो, किसी को आकर्षण पाश में बांधना हो, तो इस प्रयोग की कोई तुलना नहीं हो सकती। इसी प्रयोग के बल पर विष्णु ने स्वयं भस्मासुर को मोहित कर उसके स्वयं के हाथों से उसका विध्वंस कराया था। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद व्यक्ति स्वयं अत्यन्त सम्मोहन युक्त हो जाता है और जो भी उसके सम्पर्क में आता है, उसकी ओर स्वतः ही आकर्षित होने लगता है।

किसी भी शुक्रवार को रात्रि 10 बजे के उपरान्त साधक या साधिका सुन्दर वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख हो कर बैठे और अपने सामने सफेद वस्त्र पर **'मोहिनी वशीकरण यंत्र'** स्थापित कर उसके चारों ओर **'रक्ताभ माला'** रखे और उन दोनों का संक्षिप्त पूजन करे।

उसके बाद उसी माला से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करे –

मंत्र

॥ॐ क्लीं मोहिनी सर्व जन मोहय मोहय हुं॥

OM KLEEM MOHINI SARVA JAN MOHAYA MOHAYA HUM

यदि किसी व्यक्ति विशेष को सम्मोहित करना हो, तो 'सर्व जन' की जगह उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करें। ऐसा करने से वह व्यक्ति वशीभूत हो जाता है और स्वयं ही साधक के सामने आ कर उपस्थित हो जाता है।

यह साधना तीन दिवसीय है। तीन दिनों के उपरान्त इस यंत्र एवं माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर – 175/-

प्रियाकर्षण प्रयोग

यदि अपने प्रिय से अनबन हो गई हो अथवा वह ध्यान नहीं दे रहा हो, तो यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल परिणाम देता है। चाहे वह व्यक्ति हजारों मील दूर बैठा हो, परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही वह कुछ समय के भीतर ही साधक या साधिका के समक्ष उपस्थित हो कर उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लेता है।

स्वयं पार्वती ने शिव को प्राप्त करने के लिए इस प्रयोग को अपनाया था और उनका साहचर्य प्राप्त करने में सफल हो सकी थीं। इस प्रयोग के लिए यह आवश्यक है, कि साधक का उद्देश्य नैतिक और मानवीय मूल्यों के विपरीत न हो, अन्यथा प्रथमतः तो इस प्रयोग का प्रभाव नहीं होगा और यदि हुआ भी, तो इसका विपरीत परिणाम उस व्यक्ति को स्वयं भी झेलना पड़ता है।

साधक को **किसी भी बुधवार अथवा शुक्रवार** से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए। सर्वप्रथम रात्रि दस बजे के उपरान्त स्नान कर एवं सुन्दर वस्त्र धारण कर अपने सामने पीत वस्त्र पर **'प्रियाकर्षण यंत्र'** एवं **'प्रियाकर्षण गुटिका'** स्थापित कर उत्तर की ओर मुंह करके बैठें। यंत्र एवं गुटिका का पंचोपचार पूजन (कुंकुंम, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य के द्वारा) कर **'प्रियंकु माला'** से निम्न मंत्र का सात माला मंत्र जप करें –

मंत्र

ॐ क्लीं वज्रेश्वरी मम प्रिय आकर्षय आकर्षय फट्॥

OM KLEEEM VAJRESHWARI MAM PRIYA AAKARSHAYA AAKARSHAYA PHAT

ऐसा पांच दिनों तक नित्य करें। पांच दिन के उपरान्त यंत्र, गुटिका तथा माला को किसी नदी में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से यह प्रयोग सफल होता है और व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण होती है।

न्यौछावर – 260/-

चन्द्रललिता प्रयोग

यह प्रयोग इतना तीक्ष्ण और तुरंत प्रभाव डालने वाला है, कि यदि साध्य व्यक्ति की रक्षा स्वयं ब्रह्मा भी करें, तो भी वह मोहित होता ही है। इस प्रयोग की विशेषता यह है, कि जहां इससे अन्य जन मोहित होते हैं, वहीं व्यक्ति स्वयं भी अत्यधिक सुन्दर एवं आकर्षक हो जाता है। वह देखने में

कितना ही कुरूप क्यों न हो, परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करने के उपरान्त उसका कायाकल्प हो ही जाता है और उसके अन्दर इतना आकर्षण उतर जाता है, कि लोग देखते ही उसकी ओर स्वतः ही खिंचते चले आते हैं।

किसी भी सोमवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए। रात्रि दस बजे के उपरान्त श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख हो कर अपने सामने '**चन्द्र षोडश कला यंत्र**' स्थापित कर उसके मध्य में कुंकुंम से अपनी प्रिया या प्रिय का नाम लिखें और उसका सामान्य पूजन करें। फिर '**चन्द्र ललित माला**' के सुमेरू पर कुंकुंम का तिलक कर उसका भी पूजन करें। तत्पश्चात् सुमेरू पर लगे कुंकुंम को अपने ललाट पर लगायें। इसके उपरान्त उसी माला द्वारा निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें –

मंत्र

ॐ चन्द्रललितायै अमुकं वश्यमानय स्वाहा।।

OM CHANDRALALITAYA I AMUKAM
VASHYAMANY SWAHA

इस मंत्र का उच्चारण करते समय 'अमुकं' के स्थान पर उस व्यक्ति विशेष का नाम लें, जिसे वश में करना है, अथवा यदि सबके लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहे हैं, तो 'सर्वजन' का उच्चारण करें। यह पांच दिवसीय साधना है। पांच दिन के उपरान्त यंत्र तथा माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से साधना में सफलता प्राप्त होती है और मनोवाञ्छित कार्य सम्पन्न होता है।

हरि मेरे प्रियतम सदा रहते मेरे पास।
देखा करते वे मुझे छाया मुख मृदु हास।।
लगी हृदय में एक ही मीठी लगन ललाम।
रहूँ निरखती मैं सदा मनहर-छवि सुख-धाम।।

न्यौछावर — 190/-

अनंग प्रयोग

यह प्रयोग अति विशिष्ट एवं दिव्य है, जिसके द्वारा कामदेव को प्रसन्न कर अपना अभीष्ट प्राप्त किया जाता है। यदि प्रिय व्यक्ति किसी बात पर नाराज हो गया हो अथवा किसी अन्य पर आसक्त हो गया हो, तो ऐसे में इस प्रयोग का प्रभाव अचूक होता है और वह पुनः वापस लौट कर आता ही है। यह प्रयोग कई बार आजमाया गया है और हर बार कसौटी पर खरा उतरा है। यदि किसी के हृदय को जीतना हो, तो इस प्रयोग से बढ़ कर अन्य कोई उपाय नहीं है।

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को दस बजे के उपरान्त साधक सुन्दर वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख हो कर बैठे और अपने सामने लाल वस्त्र पर '**दिव्य अनंग महायंत्र**' स्थापित कर उसका सामान्य पूजन करे और उस पर एक '**शुक्र फल**' अर्पित करे। उसके बाद '**प्रणया माला**' से निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करे –

मंत्र

।।ॐ ह्लौं अनंग देवाय त्रैलोक्य सम्मोहय ह्लौं नमः।।

OM HLOUM ANANG DEWAY TRAILOKY
SAMMOHAY HLOUM NAMAH

यदि किसी व्यक्ति विशेष के लिए यह साधना सम्पन्न कर रहे हों, तो साधना के प्रारम्भ में ही संकल्प कर लें, कि 'मैं अमुक व्यक्ति के सम्बन्ध में यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं।'

यह छः दिवसीय साधना है, जिसके उपरान्त यंत्र, फल और माला को नदी या तालाब में विसर्जित कर देना चाहिए। ऐसा करने से प्रयोग में सफलता प्राप्त होती है और उसकी मनोकामना पूर्ण होती है।

न्यौछावर — 300/-

(गतांक से आगे)

पिछले अंक में राधा के उन 16 प्रयोगों के विषय में प्रकाशन किया गया था, जो उसने कृष्ण को प्राप्त करने के लिए सम्पन्न किए थे; परन्तु स्थानाभाव के कारण उन दुर्लभ प्रयोगों में से केवल चार प्रयोगों का प्रकाशन ही सम्भव हो पाया था। उस लेख को पढ़ कर अनेक जिज्ञासु पाठकों एवं साधकों ने पत्र लिख कर इसके पूर्ण 16 प्रयोगों को जानने की इच्छा व्यक्त की। इस बार आप लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शेष बारह प्रयोगों को एक साथ स्पष्ट किया जा रहा है, हमे आशा ही नही पूर्ण विश्वास भी है, कि आप इन प्रयोगों के माध्यम से अपने जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त करने में सफल होगें।

राधा ने जिन प्रयोगों के माध्यम से कृष्ण को पूर्ण रूप से वशीभूत कर लिया था प्रस्तुत हैं वे 16 प्रयोग

शुक्र तेजस प्रयोग

राधा ने जहां इस प्रयोग द्वारा कृष्ण को पूरी तरह से अपनी ओर आकर्षित करने में सफलता प्राप्त की, वहीं इसकी मदद से वह अपने विरोधियों के ऊपर भी हावी हो सकी। उस समय राधा के विरोध में उसके ससुराल वाले एवं अन्य गांव के लोग थे, परन्तु इस प्रयोग के सम्पन्न होते ही वे सभी तेजहीन हो गए और उसके बाद कभी भी उसके समक्ष कुछ बोलने की हिम्मत न कर सके . . . यह वास्तव में ही अद्भुत प्रयोग है, और जीवन में कुछ कर गुजरने की इच्छा रखने वालों को यह प्रयोग करना ही चाहिए।

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार को रात्रि दस बजे के उपरान्त आरम्भ करना चाहिए। साधक रात्रि को स्नान आदि से निवृत्त हो पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठें और अपने समक्ष श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर '**शुक्र तेजस यंत्र**' स्थापित करे। उसका पूजन करें। फिर '**सौन्दर्य माला**' से निम्न मंत्र की 6 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

।।ॐ शं शुक्राय कामदेव रत्यै फट्।।

OM SHAM SHUKRAY KAMDEV RATYAI PHAT

यह सात दिवसीय साधना है, जिसके उपरान्त साधक को सभी पूजन सामग्री की पोटली बनाकर किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए। ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है एवं इच्छित फल प्राप्त होता ही है।

न्यौछावर — (सामग्री पैकेट) — 195/—

अग्नि मदन प्रयोग

वास्तव में ही इस प्रयोग की कोई समानता नहीं, इस प्रयोग का कोई मुकाबला नहीं। इस प्रयोग को अगर सर्वश्रेष्ठ कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं . . .

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के उपरान्त ही राधा का सौन्दर्य हजारों गुणा बढ़ा और उसका सारा व्यक्तित्व एक अग्निस्फुलिंग की भांति चमक उठा। कृष्ण पूरी तरह से उसके प्रणय पाश में बंध गए . . . . और इतिहास साक्षी है, कि कृष्ण की हजारों पत्नियां एवं रुक्मिणी, सत्याभामा, जामवंती आदि आठ पटरानियां होने के उपरान्त भी आज मन्दिरों में कृष्ण के साथ राधा की ही मूर्ति स्थापित होती है . . . यह निश्चित रूप में प्रेम और इस अद्वितीय प्रयोग की पराकाष्ठा है . . .

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए। यह साधना चार दिवसीय है और नित्य साधक को उगते हुए

सूरज को जल अर्पण करना चाहिए। यह प्रयोग रात्रि को करना चाहिए। साधक को चाहिए, कि वह स्नान आदि कर, पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसान पर उत्तराभिमुख होकर बैठें और अपने सामने पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर **'अग्नि मदन यंत्र'** स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करे। **'अग्निस्फुलिंग माला'** से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

।।ॐ अग्निश्चेतनायै नमः।।

OM AGNISHCHETANAYAI NAMAH

इस अवधि में साधक को एक बार भोजन कर भूमि शयन करना चाहिए। साधना की समाप्ति के बाद यंत्र एवं माला को किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए। ऐसा करने से यह प्रयोग सिद्ध होता है, और साधक की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

न्यौछावर — (सामग्री पैकेट) — 180/—

इन्दु प्रयोग

इस प्रयोग की यह विशेषता है, कि इसमें व्यक्ति को हर हालत में सफलता मिलती ही है। इसके प्रभाव से जहां उसका व्यक्तित्व सौन्दर्यवान, सम्मोहन युक्त होता है वहीं उसका प्रिय भी उसके प्रति अत्यधिक आकृष्ट होता है . . . इस प्रयोग से धन, मान, यश, सम्पदा का भी व्यक्ति के जीवन में आगमन होता है।

इस प्रयोग से जहां राधा की तस्वीर पल-प्रतिपल कृष्ण की आंखों में समा गई। जहां कृष्ण हमेशा उसको स्मरण करते रहते, वहीं इसके प्रभाव से राधा पूर्ण वैभव एवं यश की भी भागीदार हो सकी . . . और आज तक उसका नाम जीवित है . . .

यह प्रयोग किसी भी सोमवार से आरम्भ करना चाहिए। यह रात्रिकालीन पांच दिवसीय साधना है। साधक रात्रि दस बजे के उपरान्त स्नान आदि कर, पूर्व की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठे और अपने सामने **'इन्दु सम्मोहन यंत्र'** स्थापित करे। उसका पूजन करे और, फिर **'विद्युत मोहिनी माला'** से निम्न मंत्र की 7 माला मंत्र जप करे —

मंत्र

।।ॐ ह्रीं मोह्य सम्मोह्य ॐ।।

OM HREEM MOHAY SAMMOHAY OM

यह मंत्र अत्यधिक तीव्र एवं शीघ्र प्रभाव देने वाला है, और आज तक यह कभी असफल नहीं हुआ। पांच दिनों तक नित्य 7 माला मंत्र जपें, और साधना समाप्ति के उपरान्त यंत्र और माला को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से साधना सिद्ध होती है और साधक को सफलता प्राप्त होती है।

न्यौछावर —(सामग्री पैकेट) —180/—

रति वश्य प्रयोग

यह प्रयोग बड़ा ही तीव्र है, और साधक को चाहिए, कि अनुचित कार्य के लिए इसका उपयोग न करे, अन्यथा विपरीत फल भोगना पड़ सकता है।

नारद ने भी राधा को यह प्रयोग देते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा था, कि अगर मात्र तुम अपने मन को कृष्ण से ही लगा सकती हो, तो ही इस प्रयोग को सम्पन्न करना, क्योंकि तुम्हारी छोटी सी भूल भी तुम्हारे लिए ही हानिकारक हो सकती है।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर जहां राधा ने स्त्रीत्व के उच्च आदर्शों एवं पवित्रता का स्थापन सम्भव किया, वहीं वह कृष्ण की भी प्रिय हो गईं। वस्तुतः इसी प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद ही कृष्ण की चेतना उसकी देह में स्थापित हो सकी और वह स्वयं दिव्य बन सकी . . .

यह प्रयोग अति विशिष्ट है और **किसी भी गुरुवार** को सम्पन्न करना चाहिए। रात्रि दस बजे के उपरान्त साधक श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठे, और अपने समक्ष श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर **'रति वश्य यंत्र'** स्थापित कर उसका विधिवत पूजन सम्पन्न करे। फिर **'वशीकरण माल्य'** से निम्न मंत्र की 11 मालाएं मंत्र जाप करे —

मंत्र

।।ॐ आकर्षण सम्मोह्य ह्रीं क्लीं ॐ।।

OM AAKARSHAN SAMMOHAY HREEM KLEEM OM

यह प्रयोग तीन दिवासीय है। साधक को नित्य तीन दिनों तक 11 माला मंत्र जप करना चाहिए और उसके बाद यंत्र और माल्य को किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए, ऐसा करने से प्रयोग फलीभूत होता है।

न्यौछावर — (सामग्री पैकेट) — 204/—

कोटि कन्दर्प लावण्य प्रयोग

कन्दर्प का संस्कृत में अर्थ होता है **'कामदेव'**, अतः इस प्रयोग का अर्थ निकलता है, वह साधना जिसे सम्पन्न करने से व्यक्ति के अन्दर करोड़ों कामदेवों का लावण्य एवं सौन्दर्य स्थापित हो जाता है . . . यह प्रयोग अपने आप में ही बेजोड़ है और इसे सम्पन्न करने मात्र से व्यक्ति त्रिलोक पर प्रभुत्व स्थापित करने में सक्षम हो जाता है।

इस साधना की वजह से ही राधा आज तक जनमानस के मस्तिष्क में जीवित है। उसे प्रेम का पर्याय समझा जाता है, और प्रेम की पराकाष्ठा का अर्थ ही '**राधा**' समझा जाता है।

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से आरम्भ करना चहिए। इसमें '**कन्दर्प लावण्य यंत्र**', '**अनंगास्त**' एवं '**सौन्दर्य हकीक**' की माला को सम्मोहन मंत्रों से आपूरित करने की आवश्यकता पड़ती है।

शुक्रवार को रात्रि दस बजे के उपरान्त साधक पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र ढके बाजोट पर यंत्र स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करे। इसके उपरान्त 'अनंगास्त' को यंत्र पर अर्पित कर अगर कोई इच्छा विशेष हा, तो उसका उच्चारण करे।

फिर सौन्दर्य हकीक माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करे –

मंत्र

।।ॐ ह्रीं ह्रीं कन्दर्प अनंगाय ह्रीं ह्रीं ॐ।।

OM HREEM HREEM KANDARP ANANGAY HREEM HREEM OM

ऐसा पांच दिन तक करे। पांचवें दिन साधना समाप्ति के बाद यंत्र और माला को किसी जलाशय में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध होता है और व्यक्ति को कुछ ही दिनों के अन्दर अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगते हैं।

न्यौछावर – (सामग्री पैकेट) – 180/–

पुष्पदन्त प्रयोग

इस प्रयोग का वर्णन-विवरण उच्चकोटि के ग्रंथों में प्राप्त होता है और इसके विषय में तो यह प्रचलित है, कि अगर इस प्रयोग को भली भांति सम्पन्न कर लिया जाय, तो फिर वह वशीभूत होता ही है और हर प्रकार से साधक के अनुकूल हो जाता है।

इस प्रयोग की विशेषता यह है, कि जो भी इसको सम्पन्न करता है, उनके शरीर से स्वत: ही स्वच्छ पुष्पों की गन्ध प्रवाहित होने लगती है, और जो कोई भी उसके सम्पर्क में आता है, वह उसके सम्मोहन पाश में बंध जाता है . . .

राधा के बारे में प्रचलित है कि वह अनिन्द्य सौन्दर्यवती थी और उसकी देह से निरन्तर कमल की गन्ध प्रवाहित होती रहती थी। वास्तव में यह इसी प्रयोग के प्रभाव से सम्भव हो सका।

साधक को चाहिए, कि बुधवार को स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ श्वेत धोती धारण कर श्वेत आसन पर पश्चिमाभिमुख होकर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर '**पुष्पदन्त यंत्र**' स्थापित कर उसका विधिवत् पंचोपचार पूजन सम्पन्न करे।

फिर '**पद्मा माला**' से निम्न मंत्र की 8 माला मंत्र जाप करे –

मंत्र

।।ॐ क्लीं काम रूपिण्यै नमः।।

OM KLEEM KAMROOPINYAI NAMAH

प्रयोग सम्पन्न होने के पश्चात यंत्र और माला को नदी में प्रवाहित करें।

न्यौछावर – (सामग्री पैकेट) – 230/–

नारायणी प्रयोग

कृष्ण स्वयं नारायण के अवतार थे और राधा भी लक्ष्मी का अंश लेकर उत्पन्न हुई थी। अत: नारद ने राधा के द्वारा नारायणी प्रयोग सम्पन्न कराकर इतिहास की ही पुनरावृत्ति की . . . यह प्रयोग अत्यधिक तीव्र और शीघ्रफल देने वाला है।

यह प्रयोग शुक्रवार के दिन से आरम्भ करना चाहिए। साधक स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर यह साधना करें। लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी से चक्र बनाएं, चक्र में मध्य में अपना नाम लिखें, उस पर '**नारायणी यंत्र**' स्थापित करें।

यंत्र का पूजन कुंकुम, पुष्प, अक्षत से करें।

'**नारायण माला**' से निम्न मंत्र का 5 माला नित्य करें –

मंत्र

।।ॐ नरत्व ह्रीं नारायणत्व श्रीं ॐ।।

OM NARATV HREEM NARAYANTV SHREEM OM

इसके उपरान्त समस्त पूजन सामग्री को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और व्यक्ति की सभी अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं।

न्यौछावर – (सामग्री पैकेट) – 180/–

विद्युत प्रभा प्रयोग

यह प्रयोग वस्तुत: कायाकल्प प्रयोग है और इसके सफलतापूर्वक सम्पन्न करने से व्यक्ति का सौन्दर्य करोड़ों गुणा बढ़ जाता है। उसमें एक नवीन चेतना एवं स्फूर्ति व्याप्त हो जाती है एवं वह दीर्घायु होकर मान, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा का अधिकारी होता है।

साधक को चाहिए, कि सोमवार के दिन स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर '**विद्युतप्रभा यंत्र**' स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करे –

फिर '**कायाकल्प माल्य**' से निम्न मंत्र की 15 माला मंत्र जप करे –

मंत्र

।।ॐ क्रौं क्रौं कायाकल्प श्रौं श्रौं ॐ।।

OM KROUM KROUM KAYAKALP
SHROUM SHROUM OM

यह प्रयोग चार दिन का है, जिसके उपरान्त यंत्र तथा माला किसी जलाशय में अर्पित कर दे। ऐसा करने से प्रयोग फलीभूत होता है।

न्यौछावर – (सामग्री पैकेट) – 210/–

वज्र वाराही प्रयोग

यह एक तीव्र तांत्रिक प्रयोग है और इसका प्रभाव अत्यधिक शीघ्र देखने को मिलता है। एक बात तो निश्चित है कि जो कोई भी इस अनिवर्चनीय प्रयोग का जानकार है उसने इसकी पूरी-पूरी प्रशंसा की है . . .

राधा को अपने समय में समाज की तरफ से न जाने कितने षड्यंत्र, एवं घात-प्रतिघात सहन करने पड़े। परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही सब उसके अनुकूल हो गए और वह अपने प्रिय कृष्ण को सम्पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकी। इसी प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद राधा का शरीर मानो वज्र के गुणों से परिपूर्ण हो गया और फिर उसे आजीवन अस्त्र, शस्त्र, अग्नि आदि का भय नहीं रहा . . .

सोमवार के दिन स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ श्वेत धोती धारण कर पश्चिमाभिमुख होकर बैठना चाहिए और अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर '**वज्र वराही महायंत्र**' स्थापित कर उसका विधिवत पंचोपचार पूजन करना चाहिए।

फिर '**लाल हकीक माला**' से निम्न मंत्र की 8 मालाएं मंत्र जाप करे –

मंत्र

।।ॐ क्लीं वज्र वैरोचनीयै फट्।।

OM KLEEM VAJRA VAIROCHANEEYAI PHAT

ऐसा पांच दिन तक करे इसके बाद यंत्र और माला को किसी जलाशय में अर्पित कर दे। ऐसा करने से प्रयोग सफल होता है, और व्यक्ति की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

न्यौछावर – (सामग्री पैकेट) – 180/–

मनोहरा प्रयोग

पन्द्रहवां प्रयोग जो नारद ने राधा को गुप्त रूप से बताया था, वह था मनोहरा प्रयोग। और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में राधा को आज्ञा दी थी, अगर वह स्थाई रूप से कृष्ण को प्रिय रूप में प्राप्त करना चाहती है, अगर वह हमेशा-हमेशा के लिए कृष्ण को अपने अनुकूल करना चाहती है तो फिर 'मनोहरा प्रयोग' आवश्यक ही नहीं अति आवश्यक है . . .

राधा ने यह प्रयोग सम्पन्न किया, तो एकबारगी में ही उसका जीवन परिवर्तित हो गया। अब तक जो संशय-असंशय उसके मन में व्याप्त होता था, वह समाप्त हो गया। शरीर के सभी दोष एवं विकार विनष्ट हो गए और वह शुद्ध भाव से कृष्ण को अपने हृदय में उतार पाई, और स्वयं भी कृष्ण के हृदय में उतर सकी . . .

यह प्रयोग चार दिवसीय है और किसी भी शुक्रवार से इसको प्रारम्भ करना चाहिए।

इसमें निम्न उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है –

1. मनोहरा सिद्धि यंत्र

2. मनोहरा माला

किसी भी शुक्रवार के दिन स्नान आदि से निवृत्त हो कर, स्वच्छ श्वेत धोती धारण कर उत्तराभिमुख होकर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर '**मनोहरा सिद्धि यंत्र**' स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करे।

फिर '**मनोहरा माला**' से निम्न मंत्र की 15 मालाएं मंत्र जप करे –

मंत्र

।।ॐ ॐ मनोहारिण्यै सुर देव्यै ॐ ॐ।।

OM OM MANOHARINYAI SUR DEVYAI OM OM

चार दिनों उपरान्त जब प्रयोग समाप्त हो जाए, तो यंत्र तथा माला किसी जलाशय में अर्पित कर दे। ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध होता है।

न्यौछावर – (सामग्री पैकेट) – 180/–

कामधेनु प्रयोग

इस प्रयोग की विशेषता यह भी है, कि व्यक्ति इच्छानुसार अपने व्यक्तित्व में बदलाव भी ला सकता है – आंखों एवं बालों के रंग, बाह्य स्वरूप को इच्छानुसार परिवर्तित कर सकता है . . .कहते हैं, कि जैसे ही राधा ने यह प्रयोग सम्पन्न

किया, और अपने प्रिय कृष्ण के लिए अपने मन में संकल्प लिया, तो उसी क्षण कृष्ण को वहां उपस्थित होना पड़ा . . .

चाहे जो कुछ भी हो इतना तो अनुभूत सत्य है, कि इस प्रयोग को सम्पन्न करने के पन्द्रह दिन के भीतर-भीतर व्यक्ति को अनुकूल परिणाम मिलते ही हैं . . .

शुक्रवार को स्नान आदि से निवृत्त होकर, श्वेत धोती धारण कर, उत्तराभिमुख हो श्वेत आसन पर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर '**कामधेनु यंत्र**' स्थापित कर उसका पूजन करे।

इसके उपरान्त '**विद्युत माला**' से निम्न मंत्र के 11 मालाएं मंत्र जाप करे —

मंत्र

।।ॐ क्रीं श्रीं ह्लीं ह्रीं ॐ।।

OM KREEM SHREEM HLEEM HREEM OM

ऐसा 5 दिनों तक करे इसके उपरान्त यंत्र तथा माला किसी जलाशय में अर्पित कर दे। ऐसा करने से प्रयोग फलीभूत होता है और व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

न्यौछावर — (सामग्री पैकेट) — 180/—

उपरोक्त 16 प्रयोग वास्तव में ही उस वरमाला के 16 अद्वितीय पुष्प हैं, जिसे पहनाकर ही राधा कृष्ण को सम्पूर्ण रूप में प्राप्त कर सकी, वर सकी . . .

कृष्ण जैसे अद्वितीय व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाना ही एक अद्भुत आश्चर्यजनक घटना है, और मात्र इसी तथ्य से इन प्रयोगों के प्रभाव और महत्व का आंकलन किया जा सकता है . . .

वस्तुतः ये मात्र 16 प्रयोग नहीं अपितु हृदय की 16 धड़कने हैं, जो आपके जीवन को प्रेम, खुशियां, उमंग एवं यौवन से सराबोर करने के लिए बेचैन हैं।